बेटी का ख़त-माँ के नाम

जुही

प्यारी मां!

सादर चरण स्पर्श,

आज मेरी शादी को पूरा एक साल हो गया है और पूरे एक साल बाद ही मैं तुम्हें ख़त लिख रही हूं। अभी तक तुमसे नाराज़ थी। तुमने विकास से मुझे शादी जो नहीं करने दी थी। याद है मां मैं उस दिन तुमसे कितनी झगड़ी थी और जिस रोज़ विकास की शादी हुई थी उस दिन तो जैसे आसमान टूट पड़ा था। धीरे-धीरे मैं अपना दुख: भूल गई थी। और फिर समीर के साथ तुमने मुझे ब्याह दिया था।

अपनी आय पर अपना नियंत्रण रखना भी हम औरतों को सीखना होगा। कमाने के साथ-साथ उसे अपनी मर्ज़ी से खर्च करना भी जरूरी है। नहीं तो औरत महज एक पैसा कमाने वाली मशीन बनकर रह जाती है। गुलामी का एक पहलू यह भी है।

मुझे याद है अपना बचपन। याद है तुम्हारी सिसकियां। याद है पिताजी। तुमने पिताजी से अपनी मर्ज़ी से शादी की थी। तुम बताती थीं। दो साल सबकुछ ठीक चला। फिर न जाने क्या हुआ। पिताजी बदल गये। तुम्हें रोज मारते-पीटते। खाना अच्छा बना हो तो भी थाली उठाकर फेंक देते। बुरा बना हो तो कहते मां ने कुछ भी नहीं सिखाया। कितनी रातें तुमने आंगन के कोने में सिसकते हुए गुज़ारी थीं। भूखी-प्यासी। मुझे बुआ भी याद है। वही तो छुप-छुपकर तुम्हें रोटी खिलाने आती थीं। हल्दी चूना लगाती थीं। मां बुआ कितनी अच्छी थी ना? फिर एक दिन तुमने पिताजी का घर छोड़ दिया। बस दो जोड़े कपड़े थैले में डाले और मुझे साथ लेकर निकल पड़ी। समझ में नहीं आया क्यों? तुम आफ़िस से शाम को जल्दी घर आ गई थीं। पिताजी मुझे अपनी गोद में चिपकाए खिला रहे थे। मैं करीब तीन साल की थी। कुछ पल तुम देखती रहीं। फिर गोदी से मुझे छीन चीखीं– तुम इस हद तक गिर जाओगे मुझे नहीं पता था और हम चले आए थे।

मैं धीरे-धीरे जवान हुई। तुमने शेरनी की तरह मेरी हिफ़ाज़त की। कहीं जाने-आने को मना नहीं किया, पर कोई भी बुरी नज़र डालता तो तुम काली का अवतार बन जाती। सब ताने देते। अपना घर छोड़ आई। अब सती-सावित्री बनती है। तुमने किसी की परवाह नहीं की।

फिर विकास से मेरी दोस्ती हुई। विकास बहुत अमीर था। खूबसूरत था। मैं उससे शादी करना चाहती थी। बस बेसुध सी हो गई थी मैं। जो विकास कहता मैं पहनती। जो विकास कहता वह पढ़ती। कहीं भी जाती तो उसकी इजाजत लेकर। खाती तो उसकी पसंद का। उसके मना करने पर गाना सीखना भी तो बंद कर दिया था। यहां तक कि वही सोचती जो विकास कहता। मैं पूरी तरह उसकी गुलाम हो गई। तुम कहती, तू इसके साथ कभी सुखी नहीं रहेगी। यह तेरे पिताजी जैसा है। वह भी ऐसे ही थे। उनको भी

मेरा गुलाम वाला रूप पसंद था। विकास भी ऐसा ही है। उस समय तुम्हारी यह बातें मुझे अच्छी नहीं लगती थीं।

तुम कहा करती थीं शादी उससे करना जो तुम्हें गुलाम नहीं, इंसान समझे। हमें इंसान समझा जाएगा तो हमारे गुणों और दोषों के साथ हमें अपनाया जायेगा। वरना या तो हम मंदिर की देवी बन जाएंगी या चौखट का पायदान। दोनों ही स्थिति में जीना कठिन है। पत्नी और पति

एक गाड़ी के दो पहिए हैं और गाड़ी में एक कार का और एक ट्रक का पहिया लगा हो तो संतुलन बिगड़ जायेगा। सरपट गाड़ी तभी चलेगी जब दोनों पहिए बराबर होंगे। बस पति-पत्नी का मेल भी ऐसा होना चाहिए।

मैंने तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ़ विकास से शादी की, पर मैं दुखी: रहने लगी। मुझे लगता था तुम स्वार्थी हो। फिर मैंने नौकरी शुरू की। अपने पैरों पर खड़ी हो गई। मुझे महसूस हुआ– आसपास के लोग मेरी इज़्ज़त करने लगे हैं। टीचर बनकर जैसे मैंने किला फ़तह कर लिया था।

मेरी कमाई में से एक भी पैसा तुम नहीं लेती थीं। कहती, अपनी आय पर अपना नियंत्रण रखना भी हम औरतों को सीखना होगा। कमाने के साथ-साथ उसे अपनी मर्ज़ी से खर्च करना भी जरूरी है। नहीं तो औरत महज एक पैसा कमाने वाली मशीन बनकर रह जाती है। गुलामी का एक पहलू यह भी है। तुम यह भी कहती, काम करना नहीं छोड़ना। इससे तुम्हारी पहचान कायम रहेगी। सिर्फ़ किसी की पत्नी व मां बनकर रहना नहीं पड़ेगा। हमारे समाज में औरत हमेशा किसी मर्द के नाम से ही जानी जाती है। थोड़ी बहुत पहचान जो भी होती है वह पुरुष की वजह से ही होती है। पर तुझे अपनी पहचान बनानी है।

समीर को तुमने ही पसन्द किया था। मेरी शादी हो गई। मुझे हमेशा लगता रहा कि समीर विकास जैसा नहीं है। हां सच मां, वह बहुत अलग है। वह मुझे इंसान समझता है। मेरे सुख-दुख में सहारा बनकर रहता है। मुझे मान और प्यार देता है। विकास और समीर का फ़र्क जो मुझे उस समय समझ नहीं आया था। अब समझ गई हूं।

मां, इतने दिन तक जो तुम्हें गलत समझा उसके लिए माफी चाहती हूं। मुझे राह दिखाने के लिए शुक्रिया, मां। इस ख़त के जरिए मैं अपने जैसी तमाम लड़कियों के लिए संदेश दे रही हूं। आपने जिस मज़बूती से मुझे गढ़ा है वह जीवन भर मेरा हौसला बढ़ाता रहेगा।

बहुत-बहुत प्यार के साथ

तुम्हारी बेटी